'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ६१ | वाराणसी, शनिवार, २३ मई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

पंजाब के कार्यकर्ताओं से

मियाँपुर (पंजाब) ४-५-'५९

ईश्वरीय शक्ति की व्यापकता को आधार मानकर ही हम सफल होंगे

हमें व्यापक बनना होगा

हमें शब्द की जरूरत है। हृदय से निकला हुआ शुद्ध शब्द हवा के जरिये सब तक पहुँचता है। जहाँ दूसरों के हृदय में हमारी बात पहुँची, वहाँ फिर कार्यकर्ताओं के नाम पर चन्द लोग नहीं रहेंगे। जिन्हें-जिन्हें हमारा शब्द स्पर्श करेगा, वे सभी कार्यकर्ता हो जायेंगे। खैर, अभी तो हम कार्यकर्ताओं के जरिये ही लोगों के पास पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। किसी भी काम को रूप देने के लिए यही एक तरीका हो सकता है।

हमारे सामने ४०-५० कार्यकर्ता बैठे हैं। ऐसे समय में हमें बराबर लगता है कि हमारे कार्यकर्ता इतने कम क्यों हैं ? जितने लोग मिलते हैं, वे सबके सब हमारे कार्यकर्ता क्यों नहीं बन जाते ? हमारे विचार का जितना अंश जिनके ध्यान में आये, वे उतना ही क्यों नहीं उठा लेते ? व्यापक भावना निर्माण करने की हमारी जितनी शक्ति है, वही हमारी कर्मशक्ति है। व्यापक भावना निर्माण करने के लिए हमें ईश्वर के पास पहुँचना चाहिए। मेरी इस बात का अर्थ एकदम आपके ध्यान में नहीं आयगा। यह कुछ गहरी बात है। धीरे-धीरे आप जितने गहरे उतरेंगे, उतना ही सही रूप समझ सकेंगे। प्रारंभिक रूप तो इतना ही है कि हम अपने आपको उस अदृष्ट शक्ति के हाथ में रहने के लायक बनायें।

ईश्वर के निकट जाने का मार्ग

दुनिया में काम करते समय यत्र-तत्र—सर्वत्र लोग एक-दूसरे की निन्दा करते हैं। कभी सकारण निन्दा होती है तो कभी अकारण। पर उन कारणों के साथ निन्दा का स्पर्श हमें नहीं होना चाहिए। हमें एक ऐसी युक्ति सधनी चाहिए कि हीन माना गया मनुष्य भी कुछ अंश में हमारा साथी हो जाय। उसके अच्छे अंश हम ग्रहण करें। हरएक में कुछ न कुछ अच्छाइयाँ हैं। उन अच्छाइयों पर ध्यान देने की जरूरत है। जब अच्छाइयाँ ग्रहण करने की कला सधेगी, तभी मनुष्य अपने आपको ईश्वरीय शक्ति के हाथों में महसूस करेगा और उत्तरोत्तर अपना चित्त शुद्ध करता चला जायगा।

जिसमें जितना गुण हो, उसीका हम चिन्तन, मनन उच्चारण करें। माँ बच्चे के गुणों का उच्चारण करती है, दोषों का नहीं। वह विश्वास रखती है कि बच्चे के दोष मिटनेवाले हैं, समझदार माता बच्चे के दोषों का प्रदर्शन किये बिना ही उसके दोष निराकरण कर गुण बढ़ाने का प्रयत्न करती है। यह मेरा अनुभूत तथ्य है। माँ की तरह ही निरन्तर सद्भावनापूर्वक हम दूसरों की तरफ देखें। यही ईश्वर के निकट जाने का तरीका है।

निन्दा की नहीं, गुणों की उपासना करें

मेरे पास कई ऐसे पत्र आते हैं, जिनमें किसी न किसी की निन्दा रहती है। कभी-कभी मेरी भी निन्दा होती है। उन पत्रों में जो शिकायतें होती हैं, वे सबकी सब गलत भी नहीं होतीं। परन्तु आज मुझे किसी के दोषों की तरफ ध्यान देने की जरूरत नहीं महसूस होती। किसी में दोष हों तो उनका भी मेरे चित्त पर कोई असर नहीं होता। मैं मानता हूँ कि दोषोंवाली स्थिति परिवर्तित होनेवाली है। दोष मिटनेवाले हैं। गुण बढ़नेवाले हैं। अभी प्रकाश है—यह कहते-कहते अन्धेरा हो जाता है और अन्धेरा है—यह कहते-कहते प्रकाश हो जाता है। इसी प्रकार दोष मिटनेवाले हैं, गुण बढ़नेवाले हैं।

मनुष्य सबेरे उठते ही भजन करना चाहता है। उस वक्त सत्त्वगुण प्रकट होता है। फिर लगती है—भूख। तब रजोगुण प्रकट होता है और भोजन के बाद सोने की इच्छा होती है, तब तमोगुण प्रकट हो जाता है। एक ही दिन में, एक ही मनुष्य में सत्त्व, रज, तम—तीनों गुण प्रकट होते हैं। अभी आप जिस मनुष्य को तत्त्वचर्चा करते देखते हैं, उसीको चन्द घंटों बाद बिल्कुल सुस्त पड़ा हुआ भी देखते हैं। तीन-चार घंटों में ही जब हालत परिवर्तित होती रहती है, तब आप किसी की क्या पहचान कर सकेंगे ? इसलिए मनुष्यों में जो न बदलनेवाली चीज है, उसकी तरफ ध्यान देना ही ठीक रहता है। कल का मनुष्य आज नहीं रहता। अमुक मनुष्य ने आज से दो साल पूर्व कुछ बुरा कार्य किया, इस तरह क्यों कहना चाहिए ? पहलेवाले का आज से क्या सम्बन्ध है ? हमारी आँखें इतनी महदूद हैं कि हम दो साल पहले के शख्स को आज भी वही समझते हैं।

शरीर बदलता है...!

हम अपना जीवन-चरित्र लिखते हैं, तब लिखते हैं कि आज से ३० वर्ष पूर्व हम अमुक स्थान में पैदा हुए। अरे तुम कहाँ जन्मे थे ? जन्मा तो कोई दूसरा था। जनमनेवाला आज

नहीं रहा है। आज का लेखक उससे भी भिन्न है। फिर भी हम मानते हैं कि हम वही हैं। विज्ञान मानता है कि सात साल की अवधि में इस शरीर के खून का बूँद-बूँद बदल जाता है। हमारे यहाँ भी १२ साल में शरीर बदलना माना जाता है। इसीलिए किसी शरीर से पाप हुआ तो पहले १२ साल की तपस्या करने के लिए कहा जाता था। १२ साल के बाद पाप खतम हो जाने की यहाँ मान्यता रही है। शरीर बदलता है, मनुष्य भी प्रतिक्षण बदलता है, लेकिन हम अपनी कल्पना से बराबर वही मानते हैं, जो पैदा होता है, बड़ा होता है या वर्षों पहले हमारा देखा हुआ होता है। मनुष्य के जीवन में जो परिवर्तन होता है, वह कहीं-कहीं तो बिलकुल स्पष्ट दिखाई देता है। कहीं कुछ अस्पष्ट होता है।

जिसमें नित नवीनता हो, वही विचार है

गांधीजी ने लिखा था कि "मेरे लेख छापना हो तो क्रमशः छापना। जो लेख मैंने पहले लिखा है, वह पहले छापना और पीछेवाला पीछे। कहीं-कहीं मेरे विचारों में असंगति दिखाई पड़े तो मेरे आखिरवाले विचारों को ही प्रमाण मानना। मैं सतत बदलता रहता हूँ। इसलिए पुराने विचारों को ही स्थायी रखने की जिम्मेवारी मुझ पर नहीं है।" इस प्रकार गांधीजी सबका सब झाड़-पोंछकर मुक्त हो गये। आज सरकार गांधीजी के कुल लेख छाप रही है। इससे अब आगे सवाल आयेगा कि महात्मा गांधी का कौन सा ग्रन्थ प्रमाण मानें। इंग्लैंड में 'बैरिस्टरी' पढ़नेवाले गांधीजी और 'भारत छोड़ो' नारा लगानेवाले बापूजी में बहुत फर्क है। जो गंगा हरिद्वार में है, वही गंगा सागर में नहीं है। उसके रूप, पानी और गुण में अत्यन्त फर्क हो जाता है। लेकिन फिर भी नाम तो गंगा ही रहता है।

हमारे यहाँ लड़का गुरुकुल में जाता तो उसका नाम बदल दिया जाता था, ऐसा रिवाज था। संन्यास लेने के बाद भी नाम परिवर्तन करने की प्रथा है। विवेकानन्द से आप आत्म-चरित्र लिखने के लिए कहते तो क्या वे नरेन्द्र का चरित्र लिखते? वे स्वयं कहते कि नरेन्द्र अलग है और विवेकानन्द अलग, संन्यास लेने का मतलब है—पुराने बन्धनों से मुक्ति।

एक साधना

हम सब संन्यास नहीं लेते, फिर भी बदलते रहते हैं। इसलिए आज आप किसी मनुष्य को जैसा पाते हैं, वैसा ही समझें। पुरानी धारणा के आधार पर किसी के लिए गलत मान्यताएँ स्थिर न करें। हमारे सामने जो भी आये, उसे हम ईश्वर का अंश समझें और स्वयं अपने आपको शून्य। यह एक प्रकार की साधना है। जितने अंशों में हम साधना में कामयाब होंगे, उतने ही अंशों में परमेश्वर हमारे नजदीक आयेगा।

◆◆◆

चुरू जिले के विकास-अधिकारियों में

चुरू (राज०) २३-३-'५९

विकास-अधिकारी गरीबों को ढूँढ-ढूँढ कर मदद करें

आज हम जिस समाज के सामने बोल रहे हैं, वह हमारा प्रिय समाज है। यों तो सारे के सारे समाज हमें प्रिय हैं, पर यह विशेष प्रिय है। इस समाज के द्वारा देश की सेवा होती है। हम भी देश की सेवा करना चाहते हैं। इसलिए हम आप की ओर एक विशेष दृष्टि से देखते हैं।

सत्ता के नहीं, सेवा के अधिकारी बनिये

इन दिनों चुनाव में जो लोग चुनकर आते हैं, वे सत्ता के जरिये सेवा का काम करते हैं। अब वे लोग चाहते हैं कि स्थान-स्थान पर ग्राम-पंचायतें बनें और उनके हाथ में ज्यादा से ज्यादा अधिकार दिये जायँ। इस तरह सरकारी सत्ता आप के हाथ में सौंपी जाय, ऐसी योजना बनायी गयी है और बनायी जा रही है। खैर, जो लोग इस योजना को पसन्द करते हों, वे करें, किंतु मेरा विचार कुछ दूसरा है। मैं यह चाहता हूँ कि आप अपने को सत्ता का भागी न समझ कर सेवा का अधिकारी समझें!

सत्ता और सेवा में अन्तर है। सत्ता ऊपर से ही चल सकती है, सेवा नीचे से। सत्ता ऊपर से नीचे आती है, जब कि सेवा नीचे से ऊपर जाती है। आप गाँववालों को यह समझा सकते हैं कि उन्हें मिल-जुलकर रहना चाहिए! गाँव का हित किस बात में है और अहित किस बात में है—यह बात अगर गाँववालों को ध्यान में आ गयी तो गाँव अपने पाँवों पर खड़े हो सकेंगे। अतः ग्रामवालों के साथ चर्चा करते समय हम उन्हें प्रेम से सलाह देने का काम करें। वे अगर अपना कर्तव्याकर्तव्य समझ जाते हैं तो फिर हम उनके साथ मिल-जुल कर काम करेंगे। जो सर्वसम्मति से तय हो, उस पर अगर आप अमल करने का प्रयास करें तो आप सही माने में ग्राम-सेवक बन जायेंगे।

मैं चाहता हूँ कि मैं अपने आपको नीचेवाले लोगों की सेवा का अधिकारी समझूँ और आप भी अपने को सेवक समझें। आप गाँववालों से ऐसा व्यवहार करें कि वे महसूस करें कि आप उनके मित्र हैं। इसके लिए आपको उनके माता-पिता का स्थान ग्रहण करना होगा। इस प्रकार का मैत्रीभाव तथा वात्सल्यभाव आप में होना चाहिए।

सबसे पहले सत्ता का उपयोग अन्त्योदय में हो

मैं सत्ता को एकदम गौण समझता हूँ और सेवा को मुख्य। फिर भी यह चाहता हूँ कि आपके हाथों में जो सत्ता आयी है, वह कल्याणकारिणी साबित हो। जो लोग अत्यन्त दुःखी हों, उनके लिए उसका इस्तेमाल किया जाय। अगर आप ऐसा मानेंगे कि ग्राम-समाज की भलाई के लिए हम ही जिम्मेवार हैं तो आपकी सत्ता का सीधा उपयोग गरीबों के लिए नहीं होगा। मान लीजिए—आसमान से पहाड़ पर पर पानी गिरा, पर वहाँ से नीचे उतरते-उतरते बीच में ही सूख गया। तो उससे जमीन को क्या लाभ हुआ? उसी प्रकार मान लीजिये—ऊपर से आपके हाथ में सत्ता आयी, फिर वह पहुँची उसके पास, जो कि आपके नजदीक है। मगर गरीब बिचारे! उनका क्या होगा? उनके लिए उस सत्ता का क्या उपयोग, जो दुःखी हैं, अबोल हैं, दीन हैं। उन बिचारों को आपकी सत्ता से प्रत्यक्ष लाभ नहीं हुआ तो आपकी सत्ता कल्याणकारिणी सिद्ध नहीं हुई, ऐसा माना जायगा। जिस प्रकार माँ अपने अपंग दुर्बल बच्चे को अधिक प्यार करती है, उसी प्रकार आपको भी जो सबसे दुःखी है, नीचे है, उसी की सेवा अधिक करनी होगी।

पाँव में फोड़ा हो तो हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं। उस समय अगर हमें कोई पूछे कि आप दुःखी क्यों हैं? फोड़ा तो आपके पाँव में हुआ है, फिर आँखों में आँसू क्यों? आपके चेहरे पर दुःख क्यों? तो हम क्या उत्तर दे सकते हैं? यह शरीर का स्वभाव है।

मैं स्नान करता हूँ तो पाँच मिनट तक पाँवों की सेवा करता हूँ, उन्हें खूब दबाता हूँ तो पाँव खुश हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि बाबा अपनी कदर कर रहा है। इसी तरह अगर मैं पाँवों की परवाह न करूँ तो वे भी कहेंगे कि हम भी तुम्हारी परवाह नहीं करेंगे। तब क्या यह यात्रा चालू रह सकेगी? हरगिज नहीं। इसलिए हम पाँवों को नीचा नहीं समझते।

समाज में हरएक की समान योग्यता और समान अधिकार होना चाहिए। सबको सब पर समान प्यार करना चाहिए। शरीर का एक अवयव दुखता है तो सारा शरीर दुःखी होता है, वैसे ही समाज में होना चाहिए। दुःखी अवयवों की चिन्ता पहले होनी चाहिए। अपना गाँव तथा समाज शरीर की तरह जीवित और चैतन्यमय होना चाहिए। सारे समाज में दुःख की संवेदना का प्रसार होना चाहिए। इस प्रकार का जो आदर्श समाज होगा, वही जीवित समाज कहा जायगा।

उत्पादन के साथ-साथ करुणा भी बढ़े

आजकल सभी जगह उत्पादन बढ़ाने की चर्चा है। जितना अधिक उत्पादन बढ़ेगा, उतना ही अधिक जीवनमान ऊँचा हो सकेगा। बड़े लोगों को उत्पादन बढ़ने से लाभ मिलेगा, लेकिन छोटे लोग भी उस लाभ से वंचित नहीं रहेंगे, ऐसा कहा जाता है। किन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि उत्पादन में वृद्धि तो होनी चाहिए, पर साथ-साथ समाज में करुणा भी बढनी चाहिए। अगर लोगों के हृदय में करुणा उत्पन्न नहीं हुई तो गरीबों को कोई लाभ नहीं मिल सकेगा।

हम सभ्यता में कितने आगे हैं, इस बात का अन्दाज कूँएँ बनाकर या मकान बनाकर नहीं लगाया जा सकता। उसके लिए तो यही देखना होगा कि हम गरीबों के साथ कैसे पेश आते हैं? हमारा उनके साथ जितना स्नेहल बर्त्ताव होगा, उतनी ही सभ्यता में हमने तरक्की की, ऐसा माना जायगा।

गरीबी को बाँटिये

हिन्दुस्तान में कितने भूमिहीन हैं? उनकी तरफ देखता कौन है? हमने भूदान-आन्दोलन के जरिये उनकी स्थिति में परिवर्तन लाने का अभियान शुरू किया। तब लोगों ने हम पर यह आक्षेप लगाया कि विनोबा गरीबी बाँटने का काम कर रहा है। हमने इसका जवाब देते हुए कहा कि आप का कहना बिल्कुल ठीक है। हम गरीबी बाँट रहे हैं। गरीबी बाँटने में ही हमारी विशेषता है।

हमने चार मनुष्यों के लिए खाना बनाया। थाली परोसी। इतने में पाँचवा आदमी आ गया। उसे देखकर क्या हम यह कहेंगे कि खाना चार आदमी के खाने लायक ही है, इसलिए आप तब तक इन्तजार कीजिए, जब तक उत्पादन नहीं बढ़ता है। हम ऐसा नहीं कर सकते। जितना खाना है, उसे ही बाँटकर खा लेंगे। बाँट कर खाने में जो आनन्द है, वह आत्मानुभूति का विषय है। घर में यदि कोई चीज कम हो तो हम जरा-जरा कम खाकर अपना गुजारा कर लेते हैं। घर का यही कानून समाज के लिए लागू होना चाहिए। घर में एक तरह से चले और समाज में दूसरी तरह से चले, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। समाज में प्रतिद्वंद्विता की प्रक्रिया चलती है और घर में प्रेम की प्रक्रिया चलती है। इसीसे जीवन में अन्तर्विरोध पैदा हो गया है। हम यह विरोध मिटाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि जो न्याय घर में चलता है, वही न्याय समाज में भी चले।

अजमेर-सम्मेलन में मास्टर तारासिंह आये थे। उनसे बातें हुईं। उन्होंने हमें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात कही। वह यह कि 'आरम्भ में आपकी भूदान की बातें मेरी समझ में नहीं आती थीं। लेकिन जब आप पर यह आक्षेप होने लगा कि आप गरीबी का बँटवारा कर रहे हैं, तब एकदम मेरा इस आन्दोलन के प्रति आकर्षण बढ़ गया। इस आन्दोलन के प्रसंग से मुझे गुरुवाणी का स्मरण हो आया 'अमीरी हो तो बाँटो'। आज हमारे पास अमीरी नहीं तो गरीबी ही बाँट रहे हैं। गरीबी बाँटने में भी सच्चाई है।'

गरीबी बाँटने से मिटती है। सुख बाँटने से बढ़ता है। मेरे पास आम हैं। मैं उन आमों को अकेला खाऊँ तो आनन्द नहीं आयेगा। दोस्तों के साथ मिलकर खाऊँ तो खूब खुशी महसूस होगी। इसी तरह किसी के घर में कोई मर गया। मैं उसके घर जाता हूँ, हमदर्दी दिखाता हूँ, तो क्या उसके परिवारवालों का दुःख नहीं घट जायेगा? हमें अभी यह बात सूझती नहीं है। क्योंकि हृदय में प्रेम का अभाव है। जिस दिन हृदय में प्रेम का अखण्ड स्रोत बहने लगेगा, उसी दिन इस बात की असलियत मालूम पड़ेगी।

मुख्य समस्या को नजरंदाज न कीजिये

मैं आठ साल से भूमि-समस्या हल करने के लिए प्रयत्नशील हूँ। लेकिन अभी बड़े लोगों का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है। इसीसे हम जितना विकास कर सकते हैं, उतना नहीं कर पा रहे हैं! योगशास्त्र में एक सूत्र है, उसका आधार लेकर मैंने कई मर्तबा कहा है कि आप पहले चूल्हा जलाइये, फिर बर्तन रखिये, फिर उसमें पानी डालिये और फिर चावल डालिये। तभी आपको भात मिल सकेगा। इसी तरह पहले भूमि की समस्या हल कीजिये। फिर पंचायतें बनाइये और सारी विकास-योजनाएँ भी चलाइए। भूमि की समस्या हल हुए बिना दूसरी योजनाओं से गरीबों का शोषण होनेवाला है।

मेरी यह बात ढेबर भाई के ध्यान में आयी। इसीसे उन्होंने एक बार दिल्ली में यह कहा 'भूमि का मसला हल न करके हम एक अहम मसले को नजरंदाज कर रहे हैं। अगर इसी तरह चलता रहेगा तो इससे खतरा उत्पन्न हो जायगा'।

पंचायतों को शोषण का जरिया न बनने दीजिए

आजकल ग्राम-पंचायतों के हाथों में सत्ता दी जा रही है। कल ही मैंने कहा था कि यह एक विकेन्द्रित शोषण की योजना है। इससे बड़ा संकट उपस्थित हो सकता है। क्योंकि पंचायतें आज की विषम परिस्थिति में सबसे दुःखी और गरीबों का खयाल नहीं कर सकतीं। पंचायत के लोग करुणावान होंगे तो गाँव का कल्याण होगा और वे दूसरे ढंग के होंगे तो गाँव दुःखी होगा। पुरानी योजना में और क्या था? राजा करुणावान होता तो प्रजा सुखी रहती थी और राजा क्रूर हुआ तो प्रजा को संकटों का सामना करना पड़ता था। इसीलिए हमें सबसे पहले विषमता हटाने का आवश्यक काम करना होगा।

मैं ये सारी बातें आपके सामने रख रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि आपको योजना कैसे बनायी जाय, यह बताना चाहता हूँ। वह तो मैं सरकार के सामने रखूँगा। आप न सरकार हैं, न जनता। आप बीच के हैं। इसलिए मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप अपने को सेवा का अधिकारी समझिये। ऊपर से नीचे सत्ता देने की योजना में भी आप अपनी सत्ता का उपयोग सेवा में ही कीजिये।

सेवक सावधान रहे

ग्रामदान, सर्वोदय, शान्ति-सेना आदि कार्यक्रमों के द्वारा

गाँव का भला कैसे हो सकता है, इस सम्बन्ध में आप अध्ययन कीजिए और फिर गाँववालों को इसकी उपयोगिता बताइये। हम आपसे एकमात्र यही अपेक्षा रखते हैं कि आप करुणावान बनें, प्रेमी बनें और अपने आपको सेवा का अधिकारी समझें। सेवा-धर्म का रास्ता बहुत कठिन है। इसमें बहुत सावधानी से बढ़ने की जरूरत है। कई बार ऐसा होता है कि सेवा की जिनको जरूरत है, उनको हमारी सेवाएँ नहीं मिलतीं। इसलिए सेवक को विवेकी और सतत जागृत होने की आवश्यकता है।

आसाम में एक बार बाढ़ आयी थी। मदद करने कि लिए वहाँ एक गुजराती भाई गये थे। वहाँ से लौटते वक्त वे मुझसे मिले थे। हमने उन्हें उनके अनुभव पूछे। उन्होंने कहा कि "अगर आप मुझे पूछें कि भूतदया के लिए कौन सा गुण अपेक्षित है तो मालूम है मैं क्या उत्तर दूँगा? कठोरता और निष्ठुरता।" मैंने पूछा—यह कैसे? वे कहने लगे कि "मान लीजिये आप हैं मदद करनेवाले और यह बात सबको मालूम हो जाती है। फिर आपके यहाँ रोते-रोते आनेवालों का ताँता-सा लग जाता है। किन्तु उन्हें अगर आप मदद देंगे तो ठगे जायेंगे। वास्तव में उस समय आपको यह समझना होगा कि ये लोग सबसे दुःखी नहीं हैं, सबसे दुःखी तो वह हो सकता है, जो आपके पास पहुँच तक नहीं सकता।" इसलिए आपको अत्यन्त निष्ठुर होकर काम करना चाहिए। अब ये सबसे दुःखी लोग मिलें तो कैसे? इसके लिए आपको ढूँढना होगा। आप गाँव में घुसेंगे तो गरीब आपके पास नहीं आ सकेंगे, बल्कि आपको उन्हें ढूँढना होगा। इसलिए मैं आपके समाज के सामने कह रहा हूँ कि गरीबों को ढूँढ-ढूँढकर मदद करें।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

चावड़ (अमरेली) १४-११-'५८

आर्थिक समानता और घरेलू शान्ति की योजना में ही विश्व-शान्ति और विश्व-कल्याण निहित है

गुजरात-काठियावाड़ की जनता सर्वोदय-विचार को बड़ी आसानी से समझ जाती है। अतएव यहाँ ग्राम-स्वराज्य की योजना अवश्य होनी चाहिए और उसकी बुनियाद के रूप में आप लोगों को ग्रामदान का विचार उठा लेना चाहिए। आजकल मैं लोगों को यहाँ यही समझाता रहता हूँ कि ग्रामदान अभय-दान है। इस बारे में पुस्तकें भी निकली हैं, उन्हें आप अवश्य पढ़ें।

धर्म नैमित्तिक नहीं

आज इस गाँव के लोगों ने मुझे बताया कि 'गाँव के एक भाई ने २-३ हजार लोगों को खिलाने की बड़ी ही सुन्दर व्यवस्था की। हमारे गाँव में अभी तक दो मत नहीं हुए। सभी लोग हर काम एक मत से करते हैं।' सुनकर मुझे बड़ा ही सन्तोष हुआ। किन्तु एक बात समझने की है। अभी तक हमारी धर्मबुद्धि नित्य धर्म के तौर पर काम नहीं करती, नैमित्तिक धर्म के तौर पर काम करती है। यही कारण है कि वह इस-उस अवसर पर प्रकट हुआ करती है, हमेशा नहीं। रामनवमी या कृष्णाष्टमी होने पर हम कुछ धर्म करें, ऐसा चलता है। लेकिन धर्म नैमित्तिक नहीं, नित्य वस्तु है। जैसे हम रोज खाते हैं, वैसे ही धर्मकार्य भी रोज करना चाहिए। समाज में करुणा होनी चाहिए। अगर उसका स्रोत सूख जाय तो अनेक गुण होने पर भी जीवन में रस न आयेगा। करुणा-बुद्धि के बारे में मुख्य विचार करना है, यही मैं लोगों को हमेशा समझाता रहता हूँ।

विकास-क्रम में काम, क्रोध का ह्रास और लोभ की वृद्धि

आज एक भाई ने सवाल किया कि 'हम लोग भौतिक उन्नति के लिए कुछ-न-कुछ करते ही हैं। लेकिन आज देश में जो नैतिक पतन हो गया है, उससे देश को मुक्त कर उन्नति के लिए क्या किया जाय?' पहले यह देखना होगा कि आखिर यह नैतिक पतन किस क्षेत्र में है? काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि विकार मानव को ग्रसते हैं और उससे भारी नुकसान होता है—यह बात तो प्राचीन काल से आज तक हम देखते आ रहे हैं। लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से विचार करें तो ध्यान में आ जायगा कि आज कौन-से दुर्गुण घटे और कौन-से बढ़े हैं।

यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में काम का वेग जितना था, उतना आज नहीं रहा। यह बात नहीं कि हम सभी काम-वासना पर विजय पा गये हैं, फिर भी पहले उसका जितना वेग था, उतना आज नहीं रहा है। उसका सर कुछ नीचे उतर आया है। भागवत, रामायण आदि अनेक ग्रंथों में हम पढ़ते हैं कि बड़े-बड़े ऋषि भी काम-वासना के शिकार हो गये। उसे देखते हुए आज हम काम पर कुछ काबू पा सके हैं। इसी तरह क्रोध का वेग भी पुराने जमाने में जितना तीव्र था, उतना आज नहीं रहा। काम और क्रोध पर बड़े-बड़े महाकाव्य लिखे गये हैं। हम पढ़ते हैं कि पुराने जमाने में सर्वश्रेष्ठ ऋषि भी क्रोध करते थे। लेकिन आज इस क्रोध पर भी हम कुछ काबू पा सके हैं। लोभ पुराने जमाने से आज विशेष बढ़ गया है। दुनिया में आज धनलोभ की मात्रा बढ़ गयी है। हमारे देश में वह विशेष रूप में देखा जाता है, क्योंकि यहाँ दरिद्रता अधिक है और यहाँ जमीन का वितरण भी विषम हो गया। कितनों के पास अत्यधिक जमीन है तो कितनों के पास बिलकुल ही नहीं है। इससे उत्पादन भी अधिक नहीं होता और बेकारी बढ़ती है। फिर अनेक प्रकार के नैतिक दोष हैं। अर्थात् ये सारे दोष आर्थिक कारण से ही होते हैं।

आर्थिक रचना को बदलना ही होगा

इस तरह स्पष्ट है कि आज जो मुख्य दोष समाज को ग्रस रहा है, वह धन-लोभ ही है। इसका कारण समाज की गलत रचना है। आज मानव के हृदय का परीक्षण करें तो वह बहुत निर्मल दीख पड़ेगा। इस तरह अन्दर से कोई खराबी नहीं। जो खराबी है, वह बाहरी ही है। यह आज की विषम आर्थिक रचना का ही परिणाम है। इसे बदलने की जरूरत है। अगर हम समान आर्थिक रचना कर सकें तो बहुत से दोष मिट सकते हैं और समाज निर्मल बन सकता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। आज मानव के सभी व्यवहार पैसे के लिए और पैसे के द्वारा हो रहे हैं। जैसे कोई व्यापारी मुनीम रखकर उसी की मार्फत व्यापार चलाता है, वैसे ही हम लोग भी पैसे के मार्फत सारा काम चलाते हैं। किन्तु पैसे का कोई स्थिर मूल्य नहीं है। उसका मूल्य रोज बदलता रहता है। वह लफंगा है। अगर हम इस लफंगे पैसे को कारभारी बनायेंगे तो फिर प्रेम और परिश्रम के बदले पैसे की ही स्थापना होगी। आज हम लोग श्रम के बदले

होड और मत्सर में पड़े हैं। इन्हीं गलत मूल्यों के कारण समाज का पतन दीख रहा है।

इसे हम आसानी से सुधार सकते हैं। इसके लिए अगर हम एक-एक गाँव में अपना स्वराज्य बनायें तो सरलता से यह सब सुधर सकता है। 'भूदान या ग्रामदान का काम भौतिक संपत्ति का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक संपत्ति का काम है'। इस तरह अगर हम आध्यात्मिक और भौतिक दोनों कार्यक्रमों में फर्क करते जायेंगे तो वह बहुत बड़ी भूल होगी।

कानून से परिवर्तन संभव है, गुण-विकास नहीं

यदि हम कानून से जमीन का वितरण कर लें तो उससे समाज में परिवर्तन हो सकता है। लेकिन उससे समाज के गुणों का विकास नहीं हो सकता। समाज का नैतिक उत्थान न होगा, सिर्फ बाह्य परिवर्तन हो जायगा। इसके विपरीत दानक्रिया से दूसरों को जमीन दें तो उससे भौतिक उन्नति का काम तो होगा ही, साथ ही साथ नैतिक उन्नति का भी काम होगा। क्योंकि इससे गुणों का विकास होता है और करुणा की स्थापना होती है। इस तरह हम देखेंगे कि हममें काफी शक्ति आ गयी है। मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान की जनता इस काम को उठा लेगी। खास कर गुजरात में, जहाँ गांधीजी ने जन्म लिया, जहाँ गुजराती का विशाल वाङ्मय है और जिस प्रान्त में मानसिक संयम निगृहीत है, वहाँ यह विचार लोग बड़ी आसानी से समझ लेंगे।

विश्वशान्ति के लिए घरेलू शान्ति की भूमिका

आज १४ नवम्बर याने पण्डितजी (श्रीजवाहरलालजी) का जन्म-दिवस है। हमारे देश में महापुरुषों की परम्परा रही है। इस देश का सर्वाधिक महत्त्व, वैभव यहाँ की जमीन, पहाड़, नदी, जंगल, शाक-भाजी या अनाज नहीं है। वैसे तो ये भी हमारे देश के वैभवों में आते हैं, पर मुख्य वैभव नहीं हैं। वास्तव में हमारी आध्यात्मिक सम्पदा प्राचीनकाल से महापुरुषों की क्रमागत परम्परा है। पण्डितजी विश्वशान्ति का काम बहुत अच्छी तरह कर रहे है। किन्तु यह काम कमजोर पड़ जायगा—अगर हम देश के अन्दर गाँव-गाँव और शहर-शहर में परस्पर स्नेह की स्थापना कर पुलिस और सेना के बगैर शान्ति की शक्ति खड़ी न कर दें। नेताओं की शक्ति केवल उनके गुणों में ही नहीं होती, बल्कि समाज का बल भी उनके पीछे हुआ करता है। उसी-पर नेताओं की शक्ति निर्भर रहती है। अवश्य ही पण्डितजी में व्यक्तिगत गुण हैं और उसीसे वे लोकप्रिय हुए हैं तथा इसीलिए लोगों को समझाने की शक्ति उनमें है। लेकिन केवल उनके गुणों से विश्वशान्ति की स्थापना नहीं हो सकती। विज्ञान-युग में व्यक्तिगत गुणों का उतना असर नहीं होता, जितना कि सामाजिक गुणों का होता है। यदि हम इसके लिए प्रयत्न नहीं करते हैं तो वह हमारे देश का दुर्भाग्य होगा।

आज सर्वत्र सेना खड़ी करने की धुन सवार है। उस पर प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं। हमारे यहाँ ३ सौ करोड़ रुपयों का वार्षिक खर्च सेना पर हो रहा है। लेकिन उससे कोई शान्ति नहीं होती। अविश्वास, भय और अशान्ति ही बढ़ती है। अतः हमें देश में शान्ति की शक्ति पैदा करने की नितान्त आवश्यकता है। आज के विज्ञान-युग में यदि कहीं शक्ति है तो शान्ति में ही है। आशान्ति में कोई शक्ति नहीं है। इस समय ऐसे-ऐसे भयानक हथियार बन गये हैं कि उनका उपयोग होने पर मानव-जाति ही मिट जायगी। अतः इन शस्त्रों से इस जमाने में बचानेवाली यदि कोई शक्ति है तो वह शान्ति की ही शक्ति है।

ग्रामदान में आराम कहाँ?

आज मुझे बताया गया कि यहाँ थोड़े बहुत सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि जैसे हर घर में भोजन होता है, वैसे ही हर घर में सर्वोदय-पात्र होना चाहिए। शान्ति और अहिंसा के लिए हर घर से वोट मिलना चाहिए और वह सर्वोदय-पात्र के रूप में सक्रिय तरीके से मिलना चाहिए। शान्ति की यह शक्ति दुनिया में सर्वत्र पड़ी है। आवश्यकता है उसे संगठित कर खड़ा करने की। यही कारण है कि दुनिया के हर कोने से हिन्दुस्तान का यह ग्रामदान-कार्यक्रम देखने के लिए लोग आते रहते हैं। वे समझते हैं कि शान्ति-शक्ति की खोज के इस कार्यक्रम से दुनिया का कल्याण होगा। इसलिए ऐसी स्थिति में हमें और आपको क्षणभर भी विश्राम न लेकर निरन्तर कार्यरत होना चाहिए। 'रामकाज साधे बिना मोहि कहाँ विश्राम।'—जब तक राम का काम नहीं सधा, तब तक हनुमान जी को विश्राम कहाँ? रामकार्य होने पर ही आराम होगा। इसके सिवा कहीं भी सर्वोत्तम आराम न मिलेगा। ग्रामदान के बारे में ऐसा ही होना चाहिए। इसके लिए आप सबको तैयार हो जाना चाहिए। गत आठ वर्षों से मैं जो सन्देश देता आ रहा हूँ, वह सत्य, प्रेम और करुणा इन तीन शब्दों में आ जाता है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

गढ़शंकर (पंजाब) ९-५-'५९

जनशक्ति और ग्रामशक्ति का विकास ही उन्नति का राजमार्ग है

आज हम एक हाईस्कूल में ठहरे हैं। विद्यार्थी तथा शिक्षक काफी तादाद में सामने उपस्थित हैं। यह दृश्य देखकर हमें अपने विद्यार्थी-जीवन की याद आ रही है। आज से ५० साल पहले जब हम हाईस्कूल में पढ़ते थे, हमारे दिल में यह तमन्ना थी कि हमारा देश आजाद हो। हमें लगता था कि हमारा जीवन आजादी के लिए लग जाय, हम उसके लिए मर मिटें। इसके बाद सन् १९१६ में हमने संकल्प करके कॉलेज छोड़ा, घर छोड़ा और समाज-सेवा में लग गये।

उस वक्त जो भावना थी, वह अब भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। बल्कि आज, जब कि हिन्दुस्तान को स्वराज्य हासिल हुए १२ साल हो रहे हैं, वह पहले से भी अधिक जोर पकड़ रही है। किन्तु आज देश को आजादी हासिल हुई है, वह सियासी आजादी है। अभी आर्थिक और सामाजिक आजादी हासिल करना बाकी है। वही असली आजादी है। सियासी आजादी हासिल हुए बिना आर्थिक और सामाजिक आजादी हासिल करने में सहूलियत न होती, इसलिए हमने सियासी आजादी हासिल कर ली, यह ठीक ही हुआ, किन्तु अब आगे का काम भी हमें करना ही चाहिए।

स्वराज्य में भोग

स्कूल-कालेजों में पढ़नेवाले आज के विद्यार्थियों में क्या ऐसी कोई तमन्ना है कि हमें कुछ करना चाहिए। वर्तमान में लगभग सभी विद्यार्थी सरकारी नौकरी हासिल करना, अपना जीवन सुखी बनाना, आदि कुछ ही कामों में अपने कर्तव्य की इति

मान बैठे हैं। हाँ, अगर सरकारी नौकरी भी नेकी से करें तो वे समाज-सेवा कर सकते हैं। मगर वह भी नहीं। न उनमें पहले जैसी उमंग है, न वह तमन्ना है और न तो नेकी से काम करने की भावना ही है। इस प्रकार के चाल-चलन से आज का काम होनेवाला नहीं है। आज त्याग की जरूरत है। अगर वह नहीं है तो देश तरक्की नहीं कर सकता। हर कोई केवल अपने ही स्वार्थ की बातें सोचे, अपनी प्रतिष्ठा, सन्मान, सुख की ही कामना करे तो देश की उन्नति हो नहीं सकती। आज देश आजाद होने के बाद भी लोगों में ज्यादातर भोग की वासना है। वह अगर ऐसी ही बनी रही तो देश की क्या हालत होगी? लेकिन उसमें भी यह एक अत्यन्त खुशी की बात है कि कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनके मन में आज की हालत पर समाधान नहीं है। वे यह महसूस करते हैं कि स्वराज्य आने पर भी गाँव-गाँव के लोग अत्यन्त दुःखी हैं। उन दुःखियों को ऊपर उठाना होगा। उसके लिए हमें प्रयत्नशील होना होगा। इस प्रकार का विचार रखनेवाले लोगों की एक जमात पैदा हुई है। अब इस जमात की ताकत बढ़ाने का काम करना है।

बाल-चारित्र्य का निर्माण तालीम के विकेन्द्रीकरण से संभव है

आजकल राजनैतिक पार्टीवाले सत्ता के जरिये ही सेवा का काम करने की सोचते हैं। सत्ता देवता की उपासना करते हुए वे उसी के इर्द-गिर्द प्रदक्षिणा करते हैं। वे यह नहीं मानते कि जनता में जाकर लोक-क्रान्ति की भावना पैदा करने से कुछ काम होगा। मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि सत्ता के जरिये कुछ भी काम नहीं होता। मगर वास्तव में होना यह चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा काम संगृहीत लोकशक्ति के द्वारा ही हो।

आज शिक्षित लोगों से मेरी बातें हुईं। आज की तालीम के बारे में वे असन्तुष्ट दिखलाई दिये। वे कहते हैं कि तालीम मुफ्त दी जाती है, इसलिए गाँव-गाँव के बच्चे स्कूल में आते हैं। अंग्रेजी पढ़ने में उनका दिल न लगने के कारण वे उसमें कच्चे रह जाते हैं। एक तरफ यह हाल है तो दूसरी तरफ उनको किसी प्रकार की अखलाकी तालीम भी नहीं दी जाती। न उन्हें गुरुवाणी सिखाई जाती है, न कुराण और न गीता ही। ऐसी परिस्थिति में बच्चों का चारित्र्य कैसे बनेगा? ऐसी बात नहीं कि शिक्षित लोग इस समस्या को महसूस नहीं करते। मगर वे लाचार हैं। ऊपर से लिखकर आये हुए ढाँचे के मुताबिक काम करने के लिए वे बाध्य हैं। इस प्रकार लोगों को यह सोचना चाहिए कि आज की तालीम में क्या कमियाँ हैं। उन्हें दूर करने के लिए हमें तालीम अपने हाथ में लेनी चाहिए। फिर गाँव-गाँव के लोग तय करें कि तालीम किस प्रकार की होनी चाहिए।

स्कूलों में दस्तकारी सिखाई जायगी। अच्छी हिन्दी, हिसाब, गुरुवाणी, गीता पढाई जायगी। ऐसा होगा, तभी गाँव के बच्चे लायक बनेंगे, चरित्रवान बनेंगे और यशस्वी बनेंगे।

तालीम के साथ-साथ गाँववालों को जमीन के बारे में सोचना चाहिए। गाँव के भूमिहीन लोगों को जमीन देने की योजना बननी चाहिए।

खादी हार गयी

आज खादीवालों से भी हमारी बातें हुईं। हम जानना चाहते हैं कि इस सभा में खद्दर पहननेवाले कितने लोग हैं? वे हाथ उठायें (करीब ४५ हाथ उठे)। इस सभा में खादी को केवल ४५ वोट मिले। इसका मतलब यह हुआ कि खादी हार गयी। स्वराज्य मिले १२ साल हुए, फिर भी देश की यह हालत है! तो ग्रामस्वराज्य केसे आयेगा? यही बात लोगों को समझाने के लिए हम पैदल घूम रहे हैं। अब आप लोग समझ लें कि हमें जमीन की मालकियत मिटाकर गाँव का परिवार बनाना है। खादी तथा अन्य ग्रामोद्योग खड़े करके गाँव के सब लोगों को काम देना है। सभी को काम मिलेगा, तभी गाँव की तरक्की हो सकेगी। सभी को काम देने की योजना गाँववालों को मिल कर बनानी होगी। जैसे-जैसे गाँव की योजना गाँववाले बनाते जायेंगे, वैसे-वैसे सारी समस्याओं का निराकरण होता जायगा और एक शानदार जन-शक्ति का निर्माण होगा।

◆◆◆

गुरुद्वारे में

५-५-'५९

गुरु गोविन्दसिंह और नानक के उदात्त आदर्शों पर चलिये

[जूई से रोपड़ जाते समय रास्ते में गुरु गोविन्दसिंह का गुरुद्वारा है। वहाँवाले भाइयों के आग्रह पर विनोबा जी ने करीब पौन घंटा गुरुद्वारा में बिताया। आरंभ में सिख भाइयों ने भजन गाये। फिर विनोबा जी ने उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए जो उद्‌गार व्यक्त किये, वे यहाँ दिये जा रहे हैं।—सं०]

आप जानते हैं कि गुरु गोविन्दसिंह का अन्तिम निवास नांदेड़ में हुआ। नांदेड़ पहले हैदराबाद स्टेट के अन्तर्गत था, अब बंबई राज्य में है। मुझे वहाँ जाने का दो बार अवसर मिला है। वहाँ पर बहुत बड़ा गुरुद्वारा है। महाराष्ट्र का यह सौभाग्य है कि गुरु गोविन्दसिंह का अन्तिम समय वहाँ बीता।

गुरु गोविन्दसिंह और शिवाजी जुल्मों के विरोधी थे

अकबर एक ऐसा बादशाह था, जिसने इस्लाम की तरह ही अन्य धर्मों की इज्जत की। वह सिखों के लंगर में भी जाता था। उसका अपना एक तरीका था। लेकिन औरंगजेब का तरीका दूसरा था। उसने जो रवैया अपनाया, उससे हिन्दुओं और सिखों को बहुत तकलीफ हुई। इसीलिए औरंगजेब की मुखालफत करने के लिए इधर गुरु गोविन्दसिंह अग्रसर हुए, उधर हुए शिवाजी महाराज! उन दोनों ने औरंगजेब का मुकाबला किया, लेकिन कभी भी मुसलमानों से द्वेष नहीं किया। उन्होंने मुसलमानों की कद्र की। शिवाजी ने मुसलमानों को मस्जिद बनाने के लिए मदद की। गुरु गोविन्दसिंह को वृत्ति भी इसी प्रकार की थी। उनका झगड़ा इस्लाम से नहीं था, मुसलमानों से भी नहीं, औरंगजेब के जुल्मों के खिलाफ उन्हें उठना पड़ा था। वे द्वेष करनेवाले नहीं थे। प्रेम उनका धर्म था। शिवाजी महाराज के गुरु स्वामी रामदास और इधर गुरु नानक से लेकर गुरु गोविन्दसिंह तक सभी ने प्रेमधर्म सिखाया। प्रेमधर्म की राह पर चलनेवाले गुरु गोविन्दसिंह और शिवाजी दोनों की मृत्यु महाराष्ट्र में हुई।

वे सेवक की भाँति सभी के पास पहुँचे

गुरु गोविन्दसिंह का जन्म पटने में हुआ था। वे धर्म का बचाव करने के लिए सारे भारत में घूमे। रेल, मोटर आदि

साधनों के न रहते हुए भी उन्होंने सिलोन से लेकर श्रीनगर तथा मक्का से लेकर आसाम तक यात्राएँ कीं। जगह-जगह प्रेम की बातें सुनाते रहे। नाम-स्मरण की महिमा बताते रहे। वे एक नेता की तरह नहीं, परन्तु सेवक की तरह सबके पास पहुँचे। आजकल तो जो उठता है, वही अपने आपको लीडर समझ बैठता है। लीडरी करते हुए जनता के सुख-दुःखों को समझना कहाँ बनता है? उसके लिए सेवाधर्म स्वीकार करने की जरूरत है। हम चाहते हैं कि पंजाब में सेवा का सिलसिला फिर चालू हो।

यह सुनकर हमें बहुत दुःख हुआ कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति में भी झगड़े हैं। उससे पंजाब को तकलीफ हो रही है। सिखों जैसे सुन्दर धर्मपंथ में झगड़े हों—यह दुःख की बात है। गुरु नानक आगे-पीछे का सब जानते थे। इसीलिए उन्होंने कहा था कि 'हम राम-नाम के सिवा किसी भी पंथ से नाता नहीं जोड़ते'। हम किसी सुन्दर पंथ से जुड़ते हैं तो भी धीरे-धीरे समिति बनाते जाते हैं। फिर एक ऐसा समय आ जाता है, जब दाढ़ी, चोटी जैसी छोटी-छोटी चीजों को महत्त्व मिल जाता है और असली चीज गायब हो जाती है। इसीलिए मन में मनन करनेवाले का सीधा सम्बन्ध धर्म से जुड़ता है। उनकी इतनी स्पष्ट घोषणा के बावजूद गुरु नानक के शिष्य बनें और एक पंथ बन गया। तब उन्होंने शिष्यों से भी कहा कि पंथों के छोटे-छोटे आग्रह मत रखो। हमारा विश्वास है कि अगर हम उनके वचनों का मनन करें तो ये छोटे-छोटे झगड़े मिट जायेंगे। महत्त्वाकांक्षी लोग अपना महत्त्व बढ़ाना चाहते हैं और वे हर जगह घुस आते हैं। इसीलिए ऐसे पवित्र स्थानों में भी झगड़े होते हैं।

सारे रिश्तों, इधर-उधर के सम्बन्धों की अपेक्षा अगर सारे सिख अपना सीधा नाता परमेश्वर से जोड़ें, नाम का जप करें तो निश्चय ही समस्त झगड़े मिट जायेंगे। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि वह आपको इस मार्ग पर अग्रसर होने का सामर्थ्य और सद्बुद्धि प्रदान करे।

◆◆◆

स्वागत-समारोह में

रोपड़ (पंजाब) ५-५-'५९

पंथवाद और सम्प्रदायवाद ने जीवन को खोखला बनाने में योग दिया है

नानक की सीख मत भूलो

गुरु नानक ने कहा है: 'आई पंथी सकल समाजी'—कुल दुनिया हमारे पंथ में आये। हम सब एक जमात है। हमारा उद्देश्य दुनिया जीतने का नहीं, मन को जीतने का है। 'मन जीते जग जीत'। मन को जीत लिया तो सारी दुनिया पर विजय हो गयी। 'ना कोई बैरी नाही बिगाना, सकल संगी बन आयी।' दुनिया में हमारा कोई बैरी नहीं है, कोई पराया नहीं है।

गुरु नानक के शब्द हमें बहुत स्फूर्ति देते हैं। वे जीवन के सम्बल हैं, समाज के प्राण हैं। लेकिन अफसोस है कि लोग उन शब्दों को भूल गये हैं। जो गाते हैं 'ना कोई बैरी नाही बिगाना' वे ही लोग आज आपस में झगड़ते हैं। चुनावों में अल्पमत-बहुमत के झगड़े होते हैं, किन्तु अब वे ही झगड़े धर्म के नाम पर भी होने लगे हैं।

बीच की एजेन्सियाँ

भगवान की कृपा से मैं पहले ही से सावधान था। इसलिए मैंने किसी पंथ से अपना ताल्लुक नहीं रखा। मैंने समझ लिया कि पंथ मेरे लिए नहीं है। अंग्रेजी में एक कहावत है "Nearer the church, Further from god"। चर्च से जितने नजदीक, उतने ही भगवान से दूर। पंथ बनता है, वहाँ असलियत नहीं रहती। छोटी-छोटी बातें सामने आती हैं। दूसरों से हम अलग दीख सकें, ऐसी वृत्ति रहती है। इसी से एक से दो, दो से चार, चार से आठ टुकड़े हो जाते हैं। गुरु नानक को समाज के टुकड़े करना पसन्द नहीं था। उन्होंने कहा है:—इन पन्थों में मत पड़ो। धर्म के साथ सम्बन्ध रखने के लिए बीच में एजेन्सियों की आवश्यकता नहीं है। भगवान और भक्त के बीच खड़े होनेवाले लोग हमें बचानेवाले नहीं, डुबानेवाले हैं। हमें उनकी जरूरत नहीं है। वे परमेश्वर के पास पहुँचने में गतिरोध पैदा करते हैं। इसलिए इन दलालों को छोड़ो, एजेन्सियों को साफ करो और सीधे धर्म तथा भगवान तक पहुँचने का प्रयत्न करो।

जोड़नेवाले तोड़नेवाले बन गये

इन दिनों नये-नये पन्थ बने हैं, जिन्हें राजनैतिक पक्ष कहते हैं। चुनाव के नाम से वे पन्थ गाँव-गाँव में आग लगाने का काम करते हैं। जो लोग चुने जाते हैं, वे तो असेम्बली या पार्लियामेंट में चले जाते हैं, लेकिन पीछे गाँवों में आग सुलगती रहती है। जहाँ पन्थों के अन्दर पक्षभेद प्रविष्ट हो जाते हैं, वहाँ वे दोनों मिलकर बहुत भयानक बन जाते हैं। इससे उस पंथ के तो टुकड़े होते ही हैं, पर समस्त समाज के भी टुकड़े हो जाते हैं। धर्म का मकसद समाज को तोड़ना नहीं है। वह दिलों को जोड़ने के लिए निकला था। गुरु नानक ने कहा है:—'आई पन्थी सकल समाजी'। कुरान में भी यही आता है 'उम्म तुम् वाहिद।' तुम्हारी एक ही जमात है। हिन्दुओं के धर्म-ग्रन्थों में भी यही आया है— 'सर्वभूतहिते रताः'। हमें केवल मानवों की ही नहीं, भूतमात्र की सेवा करनी है। इस प्रकार जो धर्म जोड़ने के लिए निकले थे, वे ही आज तोड़नेवाले साबित हो रहे हैं। माँ ही बच्चों का घात करेगी तो फिर उनका बचाव कौन करेगा?

चुनाव में आत्मस्तुति, परनिन्दा, मिथ्या भाषण,—इन तीनों का बाजार गर्म होता है। ये राजनैतिक पक्षवाले भी कैसे हैं? इन्हें जहाँ भी कुछ सत्ता दिखाई पड़ती है, वहाँ ये वैसे ही टूट पड़ते हैं, जैसे गीध या कौए लाश पर टूटते हैं। फिर आपसी तनाव के सिवाय और क्या हो सकता है?

अखबार लोकरुचि को विकृत न करें

आज किसी भी अखबार के मुखपृष्ठ पर देखिये! उसमें सिवाय लड़ाई-झगड़ों के क्या होता है? क्या वहाँ कोई जप का पाठ होता है? कब कहाँ, कौन मारा गया, किसे मारा गया, कौन पीटा गया, किसे काटा गया, इन्हीं सब खबरों से अखबार भरा रहता है। रोज सुबह अखबार आता है और नाश्ते के समय पढ़ा जाता है। एक चम्मच चाय मुँह में डाली और एक

कत्ल की खबर पढ़ ली। दूसरा चम्मच मुँह में डाला और लूट की खबर पढ़ ली। इस प्रकार खाने के साथ-साथ सारी खबरें पढ़ी जाती हैं तो संवेदनशीलता खत्म हो जाती है। फिर इन्सान पर किसी चीज का असर नहीं होता। धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि काम-क्रोध आदि विकारों के नाश के साथ-साथ एक-एक कौर खाना चाहिए। लेकिन आज तो गन्दी खबरें पढ़ते हुए खाना खाया जाता है, उससे लोगों में संस्कार-हीनता आ रही है। इस परिस्थिति में लोगों को संस्कारवान बनाये रखने का महानतम कार्य करना होगा। सर्वोदय-विचार इसी दिशा में प्रयत्नशील है।

भेदों से ऊपर उठिये

सर्वोदय सबके दिलों को जोड़नेवाला है। आज जितने भेद-प्रभेद हैं, उनसे ऊपर उठकर सोचने का पथ सर्वोदय ने 'जय जगत्' का नारा लगाकर प्रशस्त कर दिया है। अब संकुचित चीजें नहीं चलेंगी। विज्ञान के जमाने में दिमाग बड़ा बन गया है। आज एक छोटा बच्चा भी उतना ज्ञान रखता है, जितना ज्ञान अकबर बादशाह को नहीं था। बड़े दिमाग के साथ-साथ दिलों को भी बड़ा बनाना होगा। छोटे दिल रहने से आपस में कशमकश चलेगी। इन दिनों, जब कि इन्सान मंगल और चन्द्र पर जाने की तैयारियों में लगा है, छोटे दिल रखने से सारी दुनिया का नाश ही होनेवाला है। हम पंजाबी हैं, हम सिख हैं, उसमें भी कोई शिरोमणि है और कोई दूसरे मणि हैं, इस प्रकार अलग-अलग रहेंगे तो समाज तितर-बितर हो जायगा। इसलिए आप इन भेदों से ऊपर उठकर विश्व-मानवता की रक्षा कीजिए। आप इस बात को कर सकते हैं। आपके अन्दर वह ताकत है। अभी ही आपने भजन गाया है: 'ना कोई बैरी नाही बिगाना' कोई हमारा बैरी नहीं है और कोई पराया नहीं है। क्योंकि 'सकल संगी बनी आयी'।

गुरुवाणी : सर्वोदय-भजन-संग्रह

'गुरुवाणी' यानी सर्वोदय के भजनों का संग्रह। आप गुरुवाणी पर ठीक तरह से अमल करते हैं तो हमें विश्वास है कि यहाँ सर्वोदय हो जायगा। पंजाब की भूमि में सर्वोदय के बीज छिपे हैं, लोग उन्हें देख नहीं पा रहे हैं, गुरुवाणी को समझ नहीं पा रहे हैं। इसलिए सभी को सावधान करने की जरूरत है। आप इस बात की गम्भीरता को समझिये और जीवन को गुरुवाणी के अनुकूल बनाने का प्रयत्न कीजिए।

♦♦♦

प्रार्थना-प्रवचन

खंभात (बंबई) ६-११-'५८

सुखी क्षेत्रों में सर्वोदय-आन्दोलन सबसे अधिक गहरा होना चाहिए

आज की प्रार्थना-सभा खेड़ा जिले की आखिरी सभा कही जायगी। अब इस यात्रा में समुद्र पार कर सौराष्ट्र में प्रवेश होगा। यह जिला हिन्दुस्तान के अन्य जिलों की तुलना में कुछ सुखी कहा जा सकता है। अतः यह सवाल पैदा होता है कि क्या ऐसे जिले में सर्वोदय-पात्र, शांति-सेना और ग्रामदान का कार्यक्रम चलेगा? क्या लोग इस संदेश को सुनेंगे? मनुष्य को ऐसी ही आशा रखनी चाहिए, जो उचित हो। अनुचित आशा रखने पर निराश होना पड़ता है। इसलिए नाहक आशा नहीं रखनी चाहिए। योग्य आशा रखकर ही कार्यक्रम बनाना चाहिए। इसलिए इस खेड़ा जिले में क्या हो सकता है और क्या नहीं, इसका विचार करना चाहिए।

देना—समाज की महान परंपरा है

इस जिले में सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम शत-प्रतिशत पूरा हो सकता है और वह होना भी चाहिए। क्योंकि प्रेम और शांति का नाम लेकर एक मुट्ठी अनाज देने की प्रथा प्रत्येक धर्म में है। इस्लाम, जैन, हिन्दू आदि धर्मों में समाज के लिए कुछ-न-कुछ देने की प्रथा है। यह कोई नयी बात नहीं है। इस जिले में बहुत से सुखी लोग हैं। यों तो यहाँ दुःखी लोग भी हैं, फिर भी औसतन सुखी ही माने जा सकते हैं। अतः ऐसे जिले में भी प्रत्येक घर में सर्वोदय-पात्र होना चाहिए और हो सकता है। इस बारे में किसी को किसी भी तरह की कोई शंका नहीं होनी चाहिए।

सभी धर्मों का संदेश है कि प्रथम समाज के लिए दिया जाय, फिर अपने घर के लोगों के लिए दिया जाय, तथा सबसे आखिर में अपने लिए लिया जाय, यही क्रम है। यह बात केवल धर्म-पुस्तक में ही नहीं, मनुष्य के हृदय में भी भरी पड़ी है। वह खुद जानता नहीं, फिर भी सबसे अधिक चिंता समाज की ही करता है। व्यापारी खुद जितना समय घर सँभालने में देता है, उससे कहीं अधिक समय व्यापार में लगाता है। अगर वह अन्दाज लगाये तो पता चले कि उसका अधिक से अधिक समय व्यापार में ही लगता है। आखिर व्यापार भी एक सार्वजनिक सेवा ही है। नौकरों का अधिक से अधिक समय नौकरी में बीतता है। प्रोफेसरों का अधिक से अधिक समय शिक्षण, अध्ययन, अध्यापन और नयी-नयी पुस्तकें पढ़ने में ही व्यतीत होता है। इतना सब करने के बाद ही वे घर में समय दे पाते हैं।

[चालू]

अनुक्रम

१. ईश्वरीय शक्ति की व्यापकता को आधार मानकर ही....
मियाँपुर ४ मई '५९ पृष्ठ ४२९
२. विकास-अधिकारी गरीबों को ढूँढ-ढूँढकर मदद करें
चुरू २३ मार्च '५९ ,, ४३१
३. आर्थिक समानता और घरेलू शान्ति की योजना में ही....
चावड़ १४ नवंबर '५८ ,, ४३२
४. जन-शक्ति और ग्रामशक्ति का विकास ही उन्नति का....
गढ़शंकर ९ मई '५९ ,, ४३३
५. गुरु गोविन्दसिंह और नानक के उदात्त....
गुरुद्वारा ५ मई '५९ ,, ४३४
६. पंथवाद और संप्रदायवाद ने जीवन को...
रोपड़ ५ मई '५९ ,, ४३५
७. सुखी क्षेत्रों में सर्वोदय-आन्दोलन....
खंभात ६ नवंबर '५८ ,, ४३६

♦♦♦

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी।